भारत के कृषि क्षमता को बढ़ावा देना

भारत दुनिया के अग्रणी कृषि राष्ट्रों में से एक है, फिर भी वर्तमान उत्पादन और अनुपयोगित क्षमता के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

भारतीय कृषि के अद्भुत विकास यात्रा कृषि जीडीपी में स्पष्ट है, जो 1970 के दशक में 25 अरब डॉलर से बढ़कर 2024 में 630 अरब डॉलर हो गया है, क्षेत्र में एक रूपांतरकारी विकास को चिह्नित करता है।

अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों, समृद्ध मृदा प्रकारों और व्यापक कृषि अनुभव के साथ, भारत वैश्विक कृषि महाशक्ति बनने के लिए अनूठी स्थिति में है। देश का कृषि परिदृश्य पारंपरिक कृषि प्रथाओं से लेकर आधुनिक सटीक कृषि तक फैला हुआ है, जिससे विकास और नवाचार के अभूतपूर्व अवसर पैदा हो रहे हैं।

प्रमुख वृद्धि ड्राइवर हैं:

- घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय मांग में वृद्धि
- कृषि प्रथाओं में तकनीकी प्रगति
- समर्थक सरकारी नीतियां और सुधार
- मूल्य वर्धित कृषि पर बढ़ता ध्यान

कृषि क्षेत्र का अवलोकन

18%

जीडीपी में योगदान

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का हिस्सा

45%

रोजगार

कृषि में राष्ट्रीय कार्यबल

8वाँ

वैश्विक रैंक

कृषि निर्यात में भारत का स्थान

$24B

कृषि-प्रौद्योगिकी बाजार

अधिक अनुपयोगित क्षमता

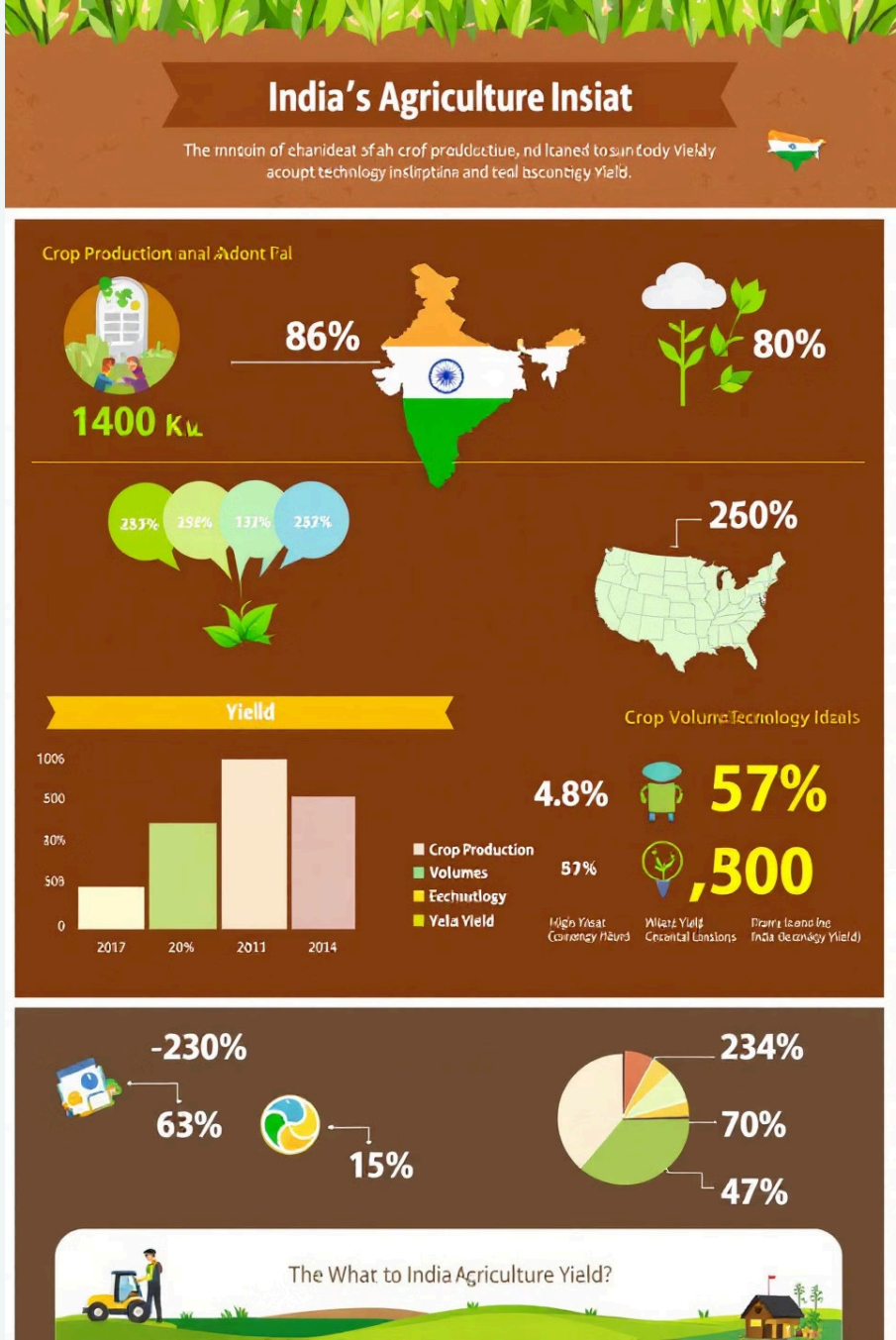

Ojaank Gurukul | IAS

भारतीय कृषि में सफलता की कहानियां

1. **हरित क्रांति**

   खाद्य स्वयंपूर्णता प्राप्त की

2. **श्वेत क्रांति**

   दूध उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि

3. **बागवानी का उदय**

   भारत प्रमुख फल और सब्जी उत्पादक बन गया

4. **कृषि प्रौद्योगिकी स्टार्टअप**

   2013-2020 के बीच 1,000 से अधिक स्टार्टअप उभरे

भारतीय कृषि में चुनौतियां

- **कम कृषि उत्पादकता**
  वैश्विक मानकों की तुलना में
- **खराब बुनियादी ढांचा**
  आपूर्ति श्रृंखला दक्षता में कमी
- **मूल्य अस्थिरता**
  बाजार पहुंच समस्याएं
- **जलवायु परिवर्तन**
  कृषि पर प्रभाव

विकास की संभावना

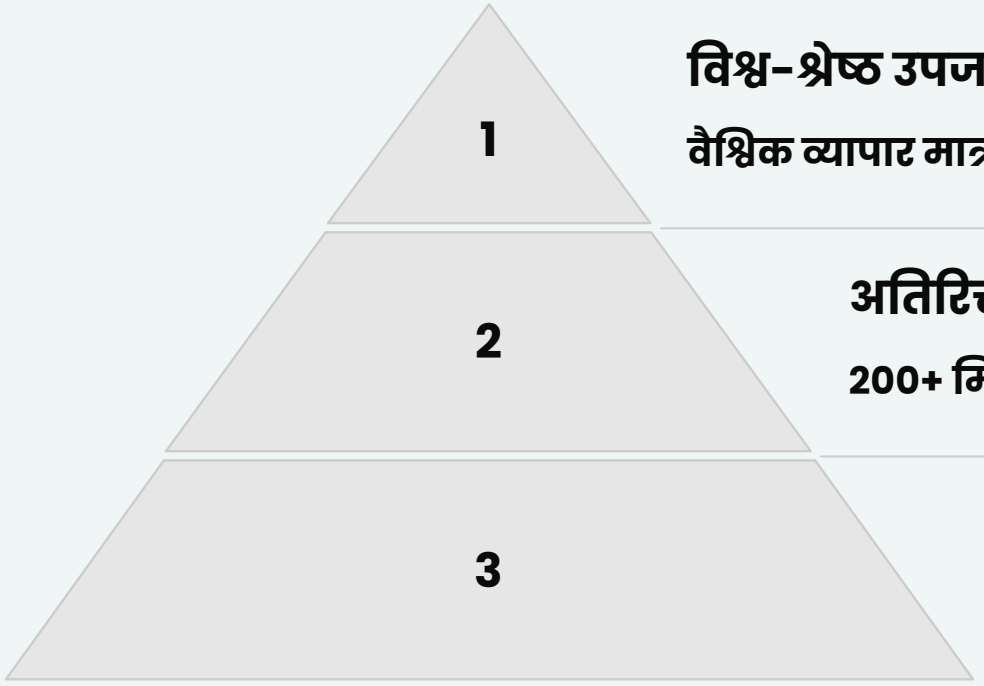

विश्व-श्रेष्ठ उपज

वैश्विक व्यापार मात्रा को पार करने की क्षमता

अतिरिक्त उत्पादन

200+ मिलियन मीट्रिक टन धान की संभावना

निर्यात वृद्धि

कृषि क्षेत्र में अपार संभावना

प्रस्तावित संस्थागत सुधार

सहकारी पारिस्थितिकी तंत्र

एफपीओ के माध्यम से उत्पादन एकत्रीकरण

अनुसंधान और विकास केंद्र

फसल-विशिष्ट उत्पादकता वृद्धि

सार्वजनिक-निजी भागीदारी

टिकाऊ कृषि के लिए AI, IoT का लाभ उठाना

निर्यात संस्थान

किसानों को वैश्विक बाजारों से जोड़ना

LIMITED TIME OFFER

Ojaank Gurukul | IAS

ब्रह्मास्त्र

IAS Prelims 2025

- Selection Wali Class
- GS Test Series
- CSAT
- GS (100 Hours)

BY OJAANK SIR

~~Rs.30,000~~ RS. 25,000

JOIN NOW

First 3 Day Classes Free

IAS With Ojaank Sir

www.ojaank.com

8506845434

8285894079

Call Now :- 8750711100/22 , 8506845434

Ojaank Gurukul | IAS

निर्यात क्षमता को प्रेरित करने वाले प्रमुख कारक

विविध कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्र

भारत के 15 अद्वितीय कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्र पूरे साल विभिन्न फसलों की खेती को सक्षम बनाते हैं। हिमालय में समशीतोष्ण फलों से लेकर केरल में उष्णकटिबंधीय मसालों तक, यह विविधता अनुपम निर्यात अवसर पैदा करती है। प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्ट जलवायु और मृदा स्थिति अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अत्यधिक मूल्यवान कृषि उत्पादों का समर्थन करती है।

वैश्विक मांग में वृद्धि

स्वास्थ्य चेतना और नस्लीय खाद्य प्राथमिकताओं में वृद्धि के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार भारतीय कृषि उत्पादों के लिए बढ़ती हुई इच्छा दिखा रहे हैं। विशेषकर एशिया और अफ्रीका में बढ़ती वैश्विक मध्यम वर्ग, विविध और उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य उत्पादों की मांग करता है। भारतीय जैविक उत्पाद और पारंपरिक सुपरफूड्स को वैश्विक स्तर पर अभूतपूर्व मांग मिल रही है।

सरकारी पहल

हाल के नीतिगत सुधारों का लक्ष्य नियमों को सरल बनाकर और बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाकर कृषि निर्यात को दोगुना करना है। सरकार ने विशिष्ट निर्यात क्षेत्रों की स्थापना की है और निर्यातकों को व्यापक वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है। नए द्विपक्षीय व्यापार समझौते भारतीय कृषि उत्पादों के लिए प्रीमियम बाजारों को खोल रहे हैं।

तकनीकी प्रगति

आधुनिक कृषि-प्रौद्योगिकी समाधान उत्पादन दक्षता और गुणवत्ता नियंत्रण में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं। स्मार्ट खेती प्रथाएं, जिसमें सटीक कृषि और IoT-आधारित निगरानी शामिल हैं, फसल उपज और गुणवत्ता में सुधार कर रही हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों को सीधे अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों से जोड़कर मध्यस्थ लागतों को कम कर रहे हैं।

प्रमुख निर्यात उत्पाद

चावल

भारत का सबसे बड़ा कृषि निर्यात, जहां बासमती किस्मों को मध्य पूर्वी और यूरोपीय बाजारों में प्रीमियम कीमतों पर बेचा जाता है। वार्षिक निर्यात 9 अरब डॉलर से अधिक है, जो वैश्विक चावल व्यापार का 40% हिस्सा है। उत्कृष्ट गुणवत्ता और जैविक प्रमाणन के लिए जाना जाता है।

समुद्री उत्पाद

तटीय क्षेत्रों में आर्थिक वृद्धि को गति देते हुए, झींगा निर्यात का नेतृत्व कर रहा है। प्रमुख बाजार अमेरिका, चीन और जापान हैं। उद्योग में 14 मिलियन से अधिक लोग काम करते हैं और स्थायी मछली पकड़ने के तरीकों और आधुनिक प्रसंस्करण सुविधाओं पर जोर देता है।

कॉफ़ी

प्रीमियम अरेबिका और रोबस्टा किस्मों को पारंपरिक छाया-वृद्धि वाली बागानों में उगाया जाता है। तत्काल कॉफ़ी निर्यात में 20% की वार्षिक वृद्धि हो रही है। यूरोपीय और ऑस्ट्रेलियाई बाजारों में विशेष कॉफ़ी को पहचान मिल रही है, जहां स्थायी खेती के तरीकों से प्रीमियम खरीदार आकर्षित हो रहे हैं।

फल और सब्जियां

आम, अंगूर और प्याज सहित विविध पोर्टफोलियो। उन्नत शीतलन श्रृंखला बुनियादी ढांचे से लंबे समय तक ताजा रहने और व्यापक पहुंच में सक्षम। दक्षिण-पूर्व एशियाई और खाड़ी देशों में बढ़ती मांग, जहां जैविक उत्पाद वर्ग 25% वार्षिक वृद्धि दर से विस्तार कर रहा है।

राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL)

1

उत्पाद का संग्रहण

पैमाने की अर्थव्यवस्था के लिए संसाधनों का पूल

2

गुणवत्ता नियंत्रण

अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करना

3

बाजार की जानकारी

वैश्विक बाजार अंतर्दृष्टि प्रदान करना

4

ब्रांड विकास

'सहकारी भारत' ब्रांड बनाना

एनसीईएल के संभावित प्रभाव

किसानों की आय में वृद्धि

मध्यस्थों को हटाकर और प्रीमियम निर्यात बाजारों तक पहुंच प्राप्त करके बेहतर मूल्य प्राप्ति के माध्यम से 25-35% की वृद्धि। प्रत्यक्ष बाजार संबंध और सामूहिक सौदेबाजी शक्ति किसानों को अंतिम मूल्य का बड़ा हिस्सा प्राप्त करने में मदद करेंगी। मूल्य वर्धित प्रसंस्करण और प्रमाणन कार्यक्रमों के माध्यम से अतिरिक्त आय स्रोत।

निर्यात वृद्धि

लक्ष्य: 60+ अरब डॉलर और उससे भी अधिक रणनीतिक बाजार विस्तार के माध्यम से। जैविक उत्पाद, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ और विशेष वस्तुओं जैसे उच्च मूल्य वाले उत्पादों पर ध्यान केंद्रित। मौजूदा व्यापार समझौतों का लाभ उठाना और दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य पूर्व और अफ्रीका में नए बाजारों का पता लगाना।

ग्रामीण विकास

प्रसंस्करण केंद्रों, गोदामों और लॉजिस्टिक हब की स्थापना के माध्यम से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, ग्रामीण क्षेत्रों में 2 मिलियन नौकरियां पैदा करना। बुनियादी ढांचे में निवेश से कनेक्टिविटी में सुधार होगा और सहायक उद्योगों को आकर्षित करेगा।

सतत कृषि

प्रमाणन कार्यक्रमों और प्रशिक्षण के माध्यम से पर्यावरण-अनुकूल कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना। जल संरक्षण तकनीकों, जैविक खेती विधियों और नवीकरणीय ऊर्जा उपयोग का कार्यान्वयन। जैव विविधता संरक्षण और कृषि संचालन में कार्बन पदचिह्न को कम करने पर ध्यान केंद्रित।

Follow Ojaank Sir

IAS with Ojaank Sir

Ojaank_Sir

IAS with Ojaank Sir

Free PDF Content

पाने के लिए अभी JOIN करें

8285894079

8285894079